E-Learning material prepared by Dr. Dhananjay Vasudeo Dwivedi, Assistant Professor, Department of Sanskrit, Dr. Shyama Prasad Mukherjee University, Ranchi

किरातार्जुनीयम् के प्रथम सर्ग का सारांश

डा० धनञ्जय वासुदेव द्विवेदी,

सहायक प्रोफेसर, संस्कृत विभाग,

डा० श्यामा प्रसाद मुखर्जी विश्वविद्यालय, राँची

'किरातार्जुनीयम्' महाकाव्य के प्रथम सर्ग को वर्णन की दृष्टि से दो भागों में विभक्त किया जा सकता है। प्रथम वनेचर की युधिष्ठिर के प्रति उक्ति और दूसरा द्रौपदी की उक्ति जो युधिष्ठिर को सम्बोधित करके कही गई। इन्हीं द्विविध उक्तियों का विशद वर्णन प्रथम सर्ग में उपलब्ध होता है। मुख्य कथानक प्रथम सर्ग का निम्न प्रकार है-

युधिष्ठिर दुर्योधन के साथ द्यूत क्रीड़ा में अपनी सम्पत्ति खोकर प्रतिज्ञा के अनुसार पत्नी द्रौपदी तथा अपने चारों भाइयों के साथ एक वर्ष का अज्ञातवास व्यतीत करने के लिये वन में रहने लगे। उसी समय उन्होंने दुर्योधन के शासन सम्बन्धी तथा प्रजा पालन सम्बन्धी समाचार जानने के लिये एक ब्रह्मचारी के वेष में वनेचर को भेजा था। वह वर्णलिङ्गी वनेचर दुर्योधन के समाचारों को जानकर द्वैतवन में जाकर युधिष्ठिर को समाचारों से अवगत कराते हुए शिष्टतापूर्वक अभिवादन करके समाचार बतलाने लगा।

वनेचर कहता है कि हे महाराज युधिष्ठिर, राजाओं का चरित्र अत्यन्त दुर्बोध होता है, उसे मेरे समान अरण्यवासी समझ नहीं सकते। फिर भी आपके प्रभाव से जो कुछ समझ सका हूँ वह व्यक्त कर रहा हूँ। वह दुर्योधन इस समय यद्यपि सिंहासनारूढ़ है फिर भी वन में रहने वाले आपसे सदा भयभीत रहा करता है। इस कारण सम्पूर्ण प्रजा को अपनी ओर आकृष्ट करने के लिये अनीतिपूर्वक जुये में जीती हुई पृथिवी को नीतिपूर्वक वश में करने का प्रयास कर रहा है। वह काम क्रोधादिक ६ अन्तः शत्रुओं को जीतकर नीति का अनुसरण करता हुआ समय का विभाजन करके सभी कार्य किया करता तथा अनुचरों के साथ मित्रवत्, मित्रों के साथ बन्धुवत् और बन्धुओं के साथ वह स्वामिभाव प्रदर्शित करता है। कर्तव्य पालन में शत्रु तथा पुत्र को समान दृष्टि से देखता है दोनों को

समान दण्ड तथा पुरस्कार देता है। कोई भेदभाव नहीं रखता। राज्य में कृषि की उन्नति के लिए सिंचाई की व्यवस्था की है। केवल मेघों के आश्रित ही कृषक वर्ग नहीं रहते। इस कारण समस्त प्रजा अपने करों को समय समय पर दे दिया करती है। वह प्रशंसनीय कार्यों के लिए अनुचरों को पुरुस्कृत किया करता है। उसके यहाँ बड़े-बड़े राजा लोग आकर उपायन प्रस्तुत किया करते हैं। अपने प्राणों की बाजी लगाकर योद्धा लोग उसकी रक्षा करने में सदा संलग्न रहते हैं। उसने कभी धनुष को उठाया नहीं और न क्रोध ही किया। बड़े-बड़े यशस्वी महारथी राजा लोग उसका सम्मान किया करते हैं और अनेक मद वाले हाथियों को भेंट रूप में प्रस्तुत किया करते हैं।

दुर्योधन विश्वस्त अनुचरों द्वारा राजाओं के गुप्त समाचार जानता रहता है। उसके उद्योग का ज्ञान लोगों को कार्य हो जाने पर ही हो पाता है। इस समय उसने निश्चिन्त होकर समस्त राज्य का कार्यभार दुःशासन पर छोड़ दिया है और स्वयं पुरोहित के आदेशानुसार यज्ञादि कार्य सम्पादित किया करता है। यह सब कार्य करते समय धर्म, अर्थ और काम आपस में बाधा नहीं पहुंचाते। यह सब कुछ होते भी यदि वह दुर्योधन कथा प्रसङ्ग में यदि आप और अर्जुन का नाम सुन लेता है तो उसी प्रकार नतमस्तक हो जाता है जैसे मन्त्र विद्ध सर्प नतमस्तक हो जाया करता है। इस कारण अब आप ऐसे बढ़ते हुए प्रबल शत्रु को जीतने के लिये कोई प्रबल उपाय करें।

इन सभी समाचारों को सुनकर महाराज युधिष्ठिर ने उसे पारितोषिक देकर विदा किया और वनेचर से प्राप्त समस्त समाचार को द्रौपदी के भवन में जाकर समस्त भाइयों के समक्ष कहा। इस वनेचर द्वारा प्राप्त समाचार को सुनकर द्रौपदी ने उत्तर दिया-

हे नाथ! यद्यपि स्त्री का उपदेश आप जैसे महान् पुरुषों के लिये अपमान के समान है फिर भी मेरी आन्तरिक व्यथा मुझे कहने को बाध्य कर रही है। मैं आपके समक्ष स्त्रियोचित लज्जा का परित्याग करके कुछ कहने जा रही है, अतः आप मेरी धृष्टता को अवश्य क्षमा कीजिएगा। हे महाराज युधिष्ठिर आपके अतिरिक्त कौन ऐसा राजा होगा जो अपनी स्त्री के समान राज्यलक्ष्मी को स्वयं दूसरों के अधीन कर देगा। आपने स्वयं मतवाले हाथी के समान गले में पड़ी हुई फूलों की सुन्दर

माला को नष्ट कर दिया है। आप ही के कारण आज महारथी भीम जो पहले कभी सुन्दर पलङ्ग पर सोते थे और लालचन्दन से चर्चित होकर सुखपूर्वक रहते थे, वही आज पैदल रेणुरुषित होकर पर्वतों में मारे-मारे फिर रहे हैं और जिस अर्जुन ने उत्तरी कुरुओं को जीतकर आपको असंख्य धन दिया था वही अब वल्कलवस्त्र देता है और स्वयं उन्हें धारण करता है। यही नहीं इन सुन्दर नकुल सहदेव को देखो जो कभी पर्यङ्क पर सोते थे और आज वन प्रदेश की कठोर भूमि पर सो रहे हैं जिसके कारण उनका शरीर जंगली हाथियों के समान हो गया है। उनके बाल रूखे हो गये हैं यह सब आपके ही कारण हुआ है। इन सबके अतिरिक्त आप अपनी दशा पर विचार कीजिए जो आप कभी बन्दीजनों की स्तुति तथा मंगलवाद्यों को सुनकर निद्रा का परित्याग करते थे। वही आप इस समय अमङ्गलात्मक सियारों की ध्वनि को सुनकर निद्रा का परित्याग करते हैं। जो आपके चरण राजाओं के मस्तक में पड़े हुए पुष्पहारों के पराग के कारण लाल रहा करते थे वही अब कुशों पर चलने के कारण रक्तरंजित हो गये हैं। साथ ही, आपकी दुर्बलता के कारण ऐसा प्रतीत होता है कि आपका यश भी दुबला हो गया है। इस समस्त स्थिति के कारण आप स्वयं हैं। इसमें कोई संशय नहीं। इन सब कष्टों के समाधान के लिए दौपदी पुनः कहती है कि-

हे महाराज युधिष्ठिर, आप अब शान्ति का परित्याग करके शत्रुओं को नष्ट करने के लिए अपना पुराना तेज धारण कीजिये क्योंकि शान्ति से राजा लोग सिद्धि को नहीं प्राप्त करते। यह तो मुनियों का आभूषण है। यदि आप शान्ति को ही सिद्धि का साधन समझते हैं तो राजाओं के चिह्नभूत धनुष का परित्याग कर दीजिए और यहीं जंगल में जटा धारण कर मुनियों के समान अग्नि में हवन कीजिए। परन्तु यह आप जैसे समर्थ व्यक्ति को शोभा नहीं देता। अतः शत्रु विजय के लिये समय की प्रतीक्षा करना आपके लिये उचित नहीं है क्योंकि विजय की इच्छा रखने वाले राजागण समय प्राप्त होने पर किसी न किसी बहाने से सन्धि के नियमों को तोड़ दिया करते हैं।

उपर्युक्त कथानक को प्रथम सर्ग में कवि ने खूब सजा कर पाठकों के समक्ष रखा है। केवल इसी सर्ग से ही 'भारवेरर्थगौरवम्' की उक्ति पूर्णरूपेण सिद्ध हो जाती है। द्रौपदी की उक्ति द्वारा कवि

ने पाण्डवों की हीन दशा का सजीव चित्रण किया है। द्रौपदी तथा वनेचर की उक्तियाँ अर्थ गौरवपूर्ण हैं। द्रौपदी के वाक्यों में एक स्वाभिमानिनी नारी के स्वर गूजते हैं। उसी वाक् परम्परा में क्षत्रियोचित रमणी के गुण उपलब्ध होते हैं साथ ही भारतीय नारी के समस्त गुण भी उसमें हैं। अतएव सब प्रकार से व्यंग्य प्रहार करने के अनन्तर वह पति के लिये मंगलकामना करती हुई उनके विजयलाभ की आशा रखती है। इस सर्ग में राजनीति का वर्णन सुगमता से किया गया है। शब्दवैचित्र्य, अर्थगौरव तथा शिष्टाचार आदि के उदाहरण सर्वत्र परिलक्षित होते हैं। इस कारण भारवि के काव्य किरातार्जुनीयम् का यह प्रथम सर्ग अत्यन्न आकर्षक तथा विद्वत्तापूर्ण है।